द्वाद्वश भावों में ग्रहों का फल (संक्षेप में)

(1) लग्न में-

1* सूर्य- चित्त, उद्वेगपूर्ण, सिर, आंख व मुख में पीड़ा, स्त्री को कष्ट।

2* चन्द्रमा- श्वास, कफ, खांसी आदि रोग।

3* मंगल- कलह, घाव, रक्तस्त्राव, धननाश।

4* बुध- देहसुख, बुद्धि-विकास, राजसम्मान, धन-प्राप्ति, तेज तथा धैर्य की वृद्धि।

5* गुरु- स्त्री-पुत्र से सुख, आरोग्य, सुबुद्धि, लाभ, सेवासुख, राज्य से आदर।

6* शुक्र- सुख, लाभ, हर्ष, कुलवृद्धि, राज्यसम्मान।

7* शनि- कफ, वायु का कोप, सिर, मुख, पेट में पीड़ा, मित्रों से द्वेष।

8* राहु-केतु- वायुरोग, कलह, धन का नाश, पुत्र-मित्रों को कष्ट।

(2) द्वितीय भाव में-

1* सूर्य- शत्रु, चोर, अग्नि तथा राजभय एवं विवाद, धननाश तथा कलह।

2* चन्द्रमा- सुख, आरोग्य, सफेद वस्तु से धन-प्राप्ति।

3* मंगल- अग्नि, चोर, राजा से भय, स्त्री को कष्ट, धननाश।

4* बुध- रोगरहित शरीर, द्रव्यलाभ, इष्ट मित्रों से सुख।

5* गुरु- धनलाभ, आरोग्य, परिवारजनों से मधुर सम्बन्ध।

6* शुक्र- धनागम, मित्रों की वृद्धि स्त्रीसुख, शत्रुनाश तथा शरीर में कान्ति की वृद्धि।

7* शनि- धननाश, मुख-नेत्रपीड़ा, राज्यभय, स्त्री-पुत्र को कष्ट।

8* राहु-केतु- धन का व्यय, रोग, चिन्ता, शरीर में पीड़ा।

(3) तृतीय भाव में-

1* सूर्य- राज्य से आदर, आरोग्य, धनलाभ, शत्रुनाश, कार्यसिद्धि।

2* चन्द्रमा- सुख, लाभ, धर्म में आस्था, भय।

3* मंगल- राज्य से आदर, धन-प्राप्ति, शत्रुनाश, आरोग्य, पारिवारिक उत्सव एवं हर्ष।

4* बुध- लाभ-हानि, सुख-दु:ख तथा शत्रु-मित्रों का मिला-जुला प्रभाव।

5* गुरु- लाभ, मित्र तथा बान्धवों से समागम, स्त्रीसुख।

6* शुक्र- धनव्यय, उपद्रव, मित्रों व कुटुम्बियों से विवाद।

7* शनि- कष्टों से मुक्ति, राजसम्मान, धनलाभ।

8* राहु-केतु- राज-सम्मान, ऐश्वर्य, धन-प्राप्ति, मित्रों से सुख।

(4) चतुर्थ भाव में-

1* सूर्य- मित्रों से द्वेष, राजभय, मनुष्य तथा चौपायों से भय।

2* चन्द्रमा- मित्र, बन्धुओं से सुख, पशुओं से लाभ।

3* मंगल- यात्रा, संकट, मित्रों को कष्ट, कुटुंब में कलह।

4* बुध- स्त्री, बन्धु से सुख, चौपायों से धनलाभ।

5* गुरु- स्त्री-मित्रों-पुत्रों से सुख, राजा से आदर, धनलाभ, भूमि, वाहन तथा विद्या-प्राप्ति।
6* शुक्र- राजसम्मान, ऐश्वर्य, आरोग्य, धनलाभ तथा इष्ट मित्रों से सुख।
7* शनि- मातृकष्ट, प्रवास, धननाश, असन्तोष, राज्य से कष्ट।
8* राहु-केतु- चिन्ता, कष्ट, मतभेद, चौपायों का क्षय।

(5) पंचम भाव में-

1* सूर्य- पुत्र रोगी, स्त्री को कष्ट, द्रव्यनाश, चोटभय, मित्रों को दुःख, दुर्बुद्धि।
2* चन्द्रमा- स्त्रीसुख, विज, पूजा, धनलाभ, सद्बुद्धि, सन्तानसुख।
3* मंगल- पुत्र को पीड़ा, स्त्री को कष्ट, उदरपीड़ा, परिवार में झगड़ा।
4* बुध- पुत्र, स्त्री, मित्र से सुख, राजा से आदर, बुद्धि से धनलाभ।
5* गुरु- सद्बुद्धि, सन्तान-प्राप्ति, सुख, लाभ, मन्त्रविद्या से लाभ।
6* शुक्र- स्त्री-पुत्र का सुख, बुद्धि एवं चतुराई से धनलाभ।
7* शनि- स्त्री-पुत्र-मित्र को कष्ट, दुष्ट बुद्धि, धननाश एवं वातपीड़ा।
8* राहु-केतु- पुत्रसुख, दुष्ट बुद्धि, शत्रु से विरोध, उदरपीड़ा।

(6) षष्ठ भाव में-

1* सूर्य- अन्नलाभ, धैर्य, राजसम्मान, शत्रुनाश, स्त्री-पुत्र सुख।
2* चन्द्रमा- वात, कफ, रोग, राजा व चोर से कष्ट, बन्धुओं से विरोध।
3* मंगल- मित्रों से सुख, धनलाभ, शत्रुनाश, राजा से आदर।
4* बुध- शत्रुवृद्धि, मतभेद, रोग।
5* गुरु- चित्त में उद्विग्नता, शत्रुवृद्धि, धननाश, द्वेष।
6* शुक्र- वात, कफ, रोग, क्षयरोग, धननाश, भय एवं कष्ट।
7* शनि- देह-सुख, द्रव्य-वृद्धि, राजा की प्रसन्नता, स्त्री-पुत्र से सुख।
8* राहु-केतु- आरोग्य, धनलाभ, शत्रुनाश, स्त्री-पुत्र से सुख, राजा की प्रसन्न्ता।

(7) सप्तम भाव में-

1* सूर्य- स्त्रीपीड़ा, देशाटन।
2* चन्द्रमा- स्त्रीसुख, राजसम्मान, व्यापार तथा जलमार्ग से लाभ।
3* मंगल- स्त्री को कष्ट, हानि, पीड़ा, भय।
4* बुध- व्यापार से लाभ, मार्ग से लाभ, स्त्रीसुख।
5* गुरु- व्यापार-वाणिज्य से लाभ, स्त्रीसुख, राजसम्मान।
6* शुक्र- स्त्री-पुत्र से लाभ, वाणिज्य से लाभ, हर्ष।
7* शनि- यात्राभय, मित्रों को कष्ट, धननाश, शत्रुभय, प्रवास।
8* राहु-केतु- शरीर पीड़ा, प्रवास, स्त्री को कष्ट, वातरोग, कमर व पेट में दर्द।

(8) अष्टम भाव में-

1* सूर्य- नेत्ररोग, धनहानि, अनेक प्रकार की शरीरपीड़ा, पित्तरोग, राजा, विष व सर्प से भय।

2* चन्द्रमा- द्रव्यनाश, उपद्रव, कफरोग, नेत्रविकार, अल्प सन्तोष।
3* मंगल- रक्त-पित्तविकार, पीड़ा, धननाश, अग्नि, चोट व राजा से भय, परिवारजनों पर विपत्ति।
4* बुध- लाभ, सुख, प्रसन्नता, शत्रुनाश।
5* गुरु- धननाश, रोग, मित्रों से कलह, वियोग, प्रवास, स्त्री-पुत्र को पीड़ा।
6* शुक्र- कम लाभ, रोग, स्त्री-पुत्र को पीड़ा, धर्मनाश, प्रवास।
7* शनि- रोग, पीड़ा, स्त्री-पुत्र को पीड़ा, दुःख, द्रव्यहानि।
8* राहु-केतु- धनव्यय, रोग, विवाद, स्त्रीकष्ट, प्रवास।

(9) नवम भाव में-

1* सूर्य- स्त्री-पुत्रों से विवाद, चित्त में व्याकुलता, धर्मकार्यों में रुचि।
2* चन्द्रमा- धर्मकार्य, चित्त में सन्तोष, यशवृद्धि, राजसम्मान।
3* मंगल- चित्त में उद्विग्नता, धननाश, कलह, पाप की कमाई।
4* बुध- धर्म में आस्था, उद्वेग, दीनता, स्त्रीपीड़ा।
5* गुरु- धनलाभ, राजा से सुख, धर्मकार्य, नाना प्रकार के सुख।
6* शुक्र- आरोग्य, सद्बुद्धि, धनलाभ, स्त्री-पुत्र से सुख।
7* शनि- स्त्री-पुत्र-मित्रकष्ट, धननाश, राजभय, दुर्गति, पापबुद्धि।
8* राहु-केतु- पैर, शरीरपीड़ा, दीनता, राजा से पीड़ा, धर्मकार्य में विलम्ब।

(10) दशम भाव में-

1* सूर्य- राजस से सुख, कार्यसिद्धि, सुख, धन व यशलाभ, कुटुम्ब-वृद्धि।
2* चन्द्रमा- द्रव्यलाभ, रोगनाश, प्रतिष्ठा एवं यशलाभ।
3* मंगल- व्यापार में धनलाभ, राजा से प्रसन्नता, तेज की वृद्धि, आरोग्य-लाभ।
4* बुध- वाणिज्य एवं राज्य से लाभ, मित्रसुख, बल व कान्ति-वृद्धि।
5* गुरु- कीर्ति, राजसम्मान, धनलाभ, मित्रसुख, उत्सव।
6* शुक्र- राजा से आदर, मित्र से सुख, धनलाभ, शत्रुनाश, कार्यसिद्धि।
7* शनि- व्यापार से हानि, राजभय, सुख का नाश, प्रवास।
8* राहु-केतु- भूमि का नाश, भय, देहपीड़ा, धननाश, विरोध।

(11) एकादश भाव में-

1* सूर्य- चौपाये से द्रव्यलाभ, परिजनों में हर्ष, राजा की प्रसन्नता, आरोग्यलाभ।
2* चन्द्रमा- पुत्रप्राप्ति, धन तथा घर की प्राप्ति, सफेद वस्तु से लाभ।
3* मंगल- स्त्री-पुत्र-मित्र से सुख, प्रताप व धनलाभ, शत्रुनाश, राजसुख।
4* बुध- द्रव्यलाभ, आरोग्य, सफेद वस्तु के व्यापार के लाभ।
5* गुरु- आरोग्य, ऐश्वर्य, स्त्री-पुत्र-मित्रसुख व चौपायों से लाभ।
6* शुक्र- व्यापार(जलमार्ग) से लाभ, प्रियजन मिलन, सुख।
7* शनि- द्रव्यलाभ, आरोग्य, स्त्रीसुख, क्रूरता।

8* राहु-केतु- आरोग्य, ऐश्वर्य, स्त्रीसुख, धनलाभ।

(12) द्वादश भाव में-

1* सूर्य- नेत्ररोग, द्रव्यनाश, बन्धुविरोध, पित्तरोग।

2* चन्द्रमा- द्रव्यनाश, नेत्ररोग, गृहकलह।

3* मंगल- धननाश, नेत्ररोग, कष्ट, राजा से भय, पुत्रकष्ट।

4* बुध- अधिक व्यय, अल्पलाभ, रोग, राजभय, कलह।

5* गुरु- झगड़ा, दुख, क्षयरोग, धनव्यय, प्रवास, राजभय।

6* शुक्र- मित्रों व स्वजनों से द्वेष, प्रवास, सत्कार्य में अधिक व्यय।

7* शनि- द्रव्यनाश, राजभय, कलह, पैर, नेत्र व हृदय में पीड़ा।

8* राहु-केतु- धनव्यय, कष्ट, राजपीड़ा, शत्रुनाश, स्त्रीपीड़ा।